E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

क्रांतिकारी आंदोलन में अशफ़ाक़ उल्ला ख़ाँ का योगदान

बलजीत सिंह
शोधकर्ता
प्रो. गिरीश कुमार सिंह
शोध -निर्देशक
प्राचार्य, डीपीबीएस कॉलेज अनूपशहर (सम्बध्द्ताः चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ)

Paper Rcevied date
05/12/2025
Paper date Publishing Date
10/12/2025
DOI
https://doi.org/10.5281/zenodo.18200713

IMPACT FACTOR
5.924

शोध सार

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम केवल संवैधानिक सुधारों और अहिंसक आंदोलनों तक सीमित नहीं था, बल्कि उसमें सशस्त्र क्रांतिकारी आंदोलन की भी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका रही। इस आंदोलन ने औपनिवेशिक सत्ता को सीधी चुनौती दी और भारतीय जनमानस में बलिदान, साहस तथा राष्ट्रप्रेम की भावना को जागृत किया। अशफ़ाक़ उल्ला ख़ाँ इसी क्रांतिकारी परंपरा के ऐसे महान नायक थे, जिन्होंने अपने जीवन, विचार और शहादत से यह सिद्ध किया कि भारतीय राष्ट्रवाद किसी एक धर्म या समुदाय की बपौती नहीं, बल्कि साझा संघर्ष और साझा स्वप्न का परिणाम है।

यह शोधपत्र अशफ़ाक़ उल्ला ख़ाँ के जीवन, वैचारिक विकास, हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (HRA) में उनकी भूमिका, काकोरी कांड में उनके योगदान, कारावास काल के विचारों, साहित्यिक संवेदना तथा उनकी शहादत के ऐतिहासिक और सामाजिक प्रभाव का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

1. भूमिका (Introduction) :

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में क्रांतिकारी आंदोलन को लंबे समय तक सीमित दृष्टि से देखा गया। प्रायः इसे केवल हिंसक प्रतिक्रिया के रूप में प्रस्तुत किया गया, जबकि वस्तुतः यह

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

औपनिवेशिक अन्याय, आर्थिक शोषण और राजनीतिक दमन के विरुद्ध युवाओं की संगठित वैचारिक प्रतिक्रिया थी।

अशफ़ाक़ उल्ला ख़ाँ उन क्रांतिकारियों में थे, जिनके जीवन से यह स्पष्ट होता है कि क्रांति केवल हथियार उठाने का नाम नहीं, बल्कि विचार, संगठन, नैतिक साहस और बलिदान की सम्मिलित प्रक्रिया है। उनका व्यक्तित्व हिंदू-मुस्लिम एकता, समाजवादी चेतना और राष्ट्रप्रेम का अनूठा संगम था।

2. क्रांतिकारी आंदोलन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :

उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दशकों में ब्रिटिश शासन की दमनकारी नीतियाँ स्पष्ट रूप से सामने आने लगी थीं।

1905 का बंग-भंग: इसने राष्ट्रवाद को उग्र स्वर दिया।

प्रथम विश्वयुद्ध (1914-18): भारतीय संसाधनों का शोषण बढ़ा।

जलियाँवाला बाग़ हत्याकांड (1919): इस घटना ने युवाओं को अहिंसा की सीमाओं पर सोचने को विवश किया।

इन परिस्थितियों में क्रांतिकारी संगठन उभरे, जिनका उद्देश्य सशस्त्र संघर्ष द्वारा ब्रिटिश सत्ता को उखाड़ फेंकना और एक स्वतंत्र, समानतावादी भारत की स्थापना करना था।

3. अशफ़ाक़ उल्ला ख़ाँ: जीवन और प्रारंभिक चेतना :

3.1 जन्म और पारिवारिक पृष्ठभूमि :

अशफ़ाक़ उल्ला ख़ाँ का जन्म 22 अक्टूबर 1900 को उत्तर प्रदेश के शाहजहाँपुर में हुआ। उनका परिवार मध्यमवर्गीय था, जहाँ धार्मिक सहिष्णुता और सांस्कृतिक समन्वय का वातावरण था।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

3.2 शिक्षा और वैचारिक निर्माण :

प्रारंभिक शिक्षा उर्दू और फ़ारसी में देशभक्ति साहित्य और कविताओं से गहरा लगावराष्ट्रीय आंदोलनों की खबरों से प्रेरणाकम उम्र में ही उन्होंने यह समझ लिया कि विदेशी शासन केवल राजनीतिक गुलामी नहीं, बल्कि आत्मसम्मान का हनन है।

4. रामप्रसाद बिस्मिल से मित्रता और वैचारिक संगति :

अशफ़ाक़ उल्ला ख़ाँ के जीवन में रामप्रसाद बिस्मिल का विशेष स्थान है।

यह मित्रता धार्मिक सीमाओं से परे थी ।

दोनों का लक्ष्य स्वतंत्र और न्यायपूर्ण भारत था ।

दोनों ने मिलकर युवाओं को संगठित किया ।

यह मित्रता भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन में हिंदू-मुस्लिम एकता का सबसे सशक्त उदाहरण मानी जाती है।

5. हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (HRA) में भूमिका :

5.1 HRA की स्थापना और उद्देश्य :

1924 में स्थापित HRA का उद्देश्य था ।

ब्रिटिश शासन का सशस्त्र प्रतिरोध गणतांत्रिक और समाजवादी भारत की स्थापना ।

5.2 अशफ़ाक़ उल्ला ख़ाँ का योगदान ।

संगठनात्मक गतिविधियाँ ।

धन-संग्रह और गोपनीय योजनाएँ ।

युवाओं में क्रांतिकारी चेतना का प्रसार ।

वे केवल कार्यकर्ता नहीं, बल्कि वैचारिक रूप से भी संगठन के मज़बूत स्तंभ थे।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

6. काकोरी कांड (1925) : भूमिका और महत्व

6.1 घटना का विवरण :

9 अगस्त 1925 को काकोरी के पास सरकारी ख़ज़ाने को ले जा रही ट्रेन को रोका गया। उद्देश्य था संगठन के लिए आर्थिक संसाधन जुटाना।

6.2 अशफ़ाक़ उल्ला ख़ाँ की भूमिका :

योजना निर्माण में सक्रिय

जोखिमपूर्ण जिम्मेदारियाँ

गिरफ्तारी से बचने का प्रयास

काकोरी कांड ने क्रांतिकारी आंदोलन को राष्ट्रीय पहचान दी और ब्रिटिश सरकार को कठोर दमन के लिए मजबूर किया।

7. गिरफ्तारी, मुक़दमा और कारावास

अशफ़ाक़ उल्ला ख़ाँ को लंबी तलाश के बाद गिरफ़्तार किया गया।

कठोर पूछताछ ।

न्यायालय में निर्भीक वक्तव्य

किसी भी प्रकार की क्षमा-याचना से इंकार

कारावास के दौरान उन्होंने आत्ममंथन किया और अपने विचारों को और स्पष्ट रूप दिया।

8. वैचारिक दृष्टि: राष्ट्र, धर्म और समाज :

8.1 राष्ट्रवाद की अवधारणा :

अशफ़ाक़ का राष्ट्रवाद समावेशी था।

धर्म निजी आस्था है

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

राष्ट्र सामूहिक उत्तरदायित्व

8.2 हिंदू-मुस्लिम एकता उन्होंने स्पष्ट कहा कि "भारत की आज़ादी बिना आपसी एकता के असंभव है।"

8.3 सामाजिक न्याय : वे केवल राजनीतिक स्वतंत्रता नहीं, बल्कि शोषण-मुक्त समाज चाहते थे।

9. साहित्यिक संवेदना और कविताएँ : अशफ़ाक़ उल्ला ख़ाँ कवि-हृदय क्रांतिकारी थे।

उनकी कविताओं में देशभक्ति मानवीय पीड़ा बलिदान का सौंदर्य ।

उनका साहित्य बताता है कि वे हिंसा के उपासक नहीं, बल्कि विवश प्रतिरोध के समर्थक थे।

10. शहादत (19 दिसंबर 1927) :

अशफ़ाक़ उल्ला ख़ाँ को 19 दिसंबर 1927 को फाँसी दी गई।

मृत्यु से भय नहीं

राष्ट्र के लिए गर्व

आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा

उनकी शहादत भारतीय इतिहास का अमर अध्याय बन गई।

11. स्वतंत्रता संग्राम पर प्रभाव :

युवाओं में क्रांतिकारी चेतना

हिंदू-मुस्लिम एकता का सशक्त संदेश

औपनिवेशिक शासन की नैतिक वैधता पर प्रश्न

उनका जीवन बताता है कि बलिदान कभी व्यर्थ नहीं जाता।

12. समकालीन प्रासंगिकता

आज के भारत में अशफ़ाक़ उल्ला ख़ाँ:

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

सामाजिक सौहार्द के प्रतीक

युवाओं के आदर्श

लोकतांत्रिक मूल्यों की प्रेरणा

उनका विचार आज भी उतना ही प्रासंगिक है।

13. निष्कर्ष (Conclusion) :

अशफ़ाक़ उल्ला ख़ाँ भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के ऐसे क्रांतिकारी थे, जिनका योगदान केवल काकोरी कांड तक सीमित नहीं था। उनका संपूर्ण जीवन राष्ट्रप्रेम, एकता, साहस और बलिदान का जीवंत उदाहरण है। उन्होंने यह सिद्ध किया कि सच्ची क्रांति नफ़रत नहीं, बल्कि न्याय, समानता और मानवता पर आधारित होती है।

14. संदर्भ सूची :

1. बिस्मिल, रामप्रसाद - आत्मकथा ।
2. सुमित सरकार - आधुनिक भारत का इतिहास ।
3. बिपिन चंद्र - भारत का स्वतंत्रता संग्राम ।
4. काकोरी षड्यंत्र केस: सरकारी अभिलेख ।
5. चंद्र, विपिन - India's Struggle for Independence.